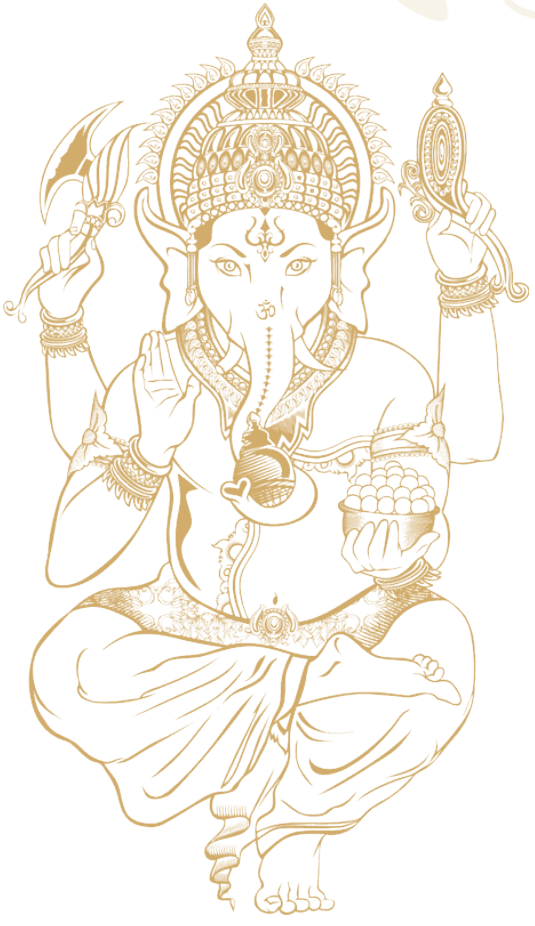

Mr.Amay vats

24 Sep 2013

10:18 PM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120382601**

तिथि 24/09/2013 **समय** 22:18:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:03:07
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	22:11:35 घं
वेलान्तर	00:07:57 घं
सूर्योदय	06:10:34 घं
सूर्यास्त	18:15:16 घं
चैत्रादि संवत	2070
शक संवत	1935
मास	आश्विन
पक्ष	कृष्ण
तिथि	6
नक्षत्र	रोहिणी
योग	वज्र
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सर्प
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरूड़
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	ओ-ओमप्रकाश
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-स्वर्ण
होरा	शुक्र
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

चन्द्र 9वर्ष 6मा 4दि
मंगल
31/03/2023
31/03/2030

मंगल	27/08/2023
राहु	14/09/2024
गुरु	21/08/2025
शनि	29/09/2026
बुध	27/09/2027
केतु	23/02/2028
शुक्र	24/04/2029
सूर्य	30/08/2029
चन्द्र	31/03/2030

योगिनी

सिद्धा 6वर्ष 7मा 27दि
संकटा
23/05/2020
23/05/2028

संकटा	03/03/2022
मंगला	23/05/2022
पिंगला	01/11/2022
धान्या	03/07/2023
भ्रामरी	23/05/2024
भद्रिका	02/07/2025
उल्का	01/11/2026
सिद्धा	23/05/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			23:14:37	वृष	रोहिणी	4	चंद्र	सूर्य	---	0:00			
सूर्य			07:44:43	कन्या	उ०फाल्गुनी	4	सूर्य	केतु	सम राशि	1.05	कलत्र	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			10:38:58	वृष	रोहिणी	1	चंद्र	चंद्र	मूलत्रिकोण	1.24	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			23:19:35	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	चंद्र	नीच राशि	1.19	भ्रातृ	भ्रातृ	साधक
बुध			29:31:21	कन्या	चित्रा	2	मंगल	शनि	स्वराशि	1.09	आत्मा	ज्ञाति	सम्पत
गुरु			23:31:57	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.21	अमात्य	धन	क्षेम
शुक्र			21:20:30	तुला	विशाखा	1	गुरु	गुरु	स्वराशि	1.49	मातृ	कलत्र	क्षेम
शनि			15:17:26	तुला	स्वाति	3	राहु	शुक्र	उच्च राशि	1.39	पुत्र	आयु	विपत
राहु			14:11:42	तुला	स्वाति	3	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु			14:11:42	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

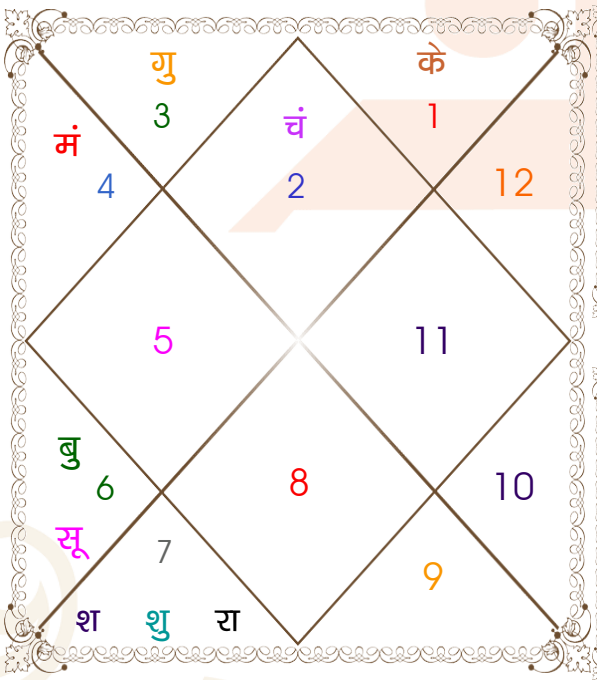

चन्द्र कुंडली

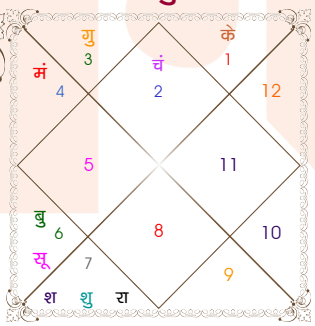

नवमांश कुंडली

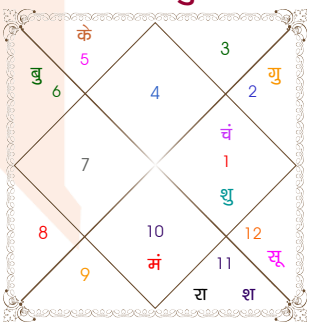

सर्वाष्टकवर्ग

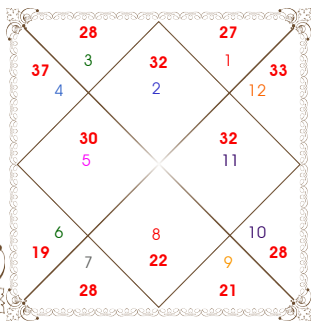

दशमांश कुंडली

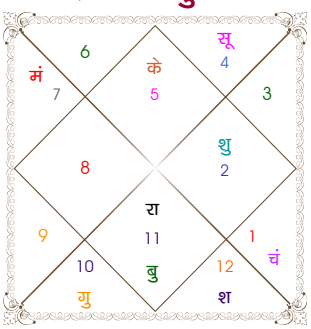

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman
Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India
+919837310158
ptsumanjha@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र है। नक्षत्रानुसार आपका गण मनुष्य, योनि सर्प, नाड़ी अन्त्य वर्ण वैश्य तथा वर्ग गरूड़ है। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "ओ" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा ओमप्रकाश।

आप आस्तिक व्यक्ति होंगे तथा भगवान में आपकी पूर्ण आस्था होगी। धर्म के कार्यों को आप कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। तथा धर्म सम्बन्धी कार्यों की आपको पूर्ण जानकारी होगी। आपका स्वरूप दर्शनीय तथा स्वभाव सरल एवं सुन्दर होगा। बोलने में आप अत्यन्त चतुर होंगे। किसी भी बात का तत्काल उचित प्रत्युत्तर आप चतुरता से देंगे। आप बुद्धिमान होंगे तथा गूढ़ से गूढ़ विषय को भी स्पष्ट रूप से दूसरे लोगों को समझाने की कला में होंगे।

धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारूशीलः विलसत्कलवेरः।
वाग्विलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

धन से आप आजीवन युक्त रहेंगे। इसका अभाव नहीं रहेगा। कृतज्ञता के गुण से आप सुशोभित रहेंगे। यदि कोई व्यक्ति आपका कोई कार्य करेगा तो आप हृदय से उसका आभार प्रदर्शन करेंगे। राज्यमंत्री या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको सम्मान एवं आदर प्राप्त होगा। आप प्रिय वाणी बोलेंगे जो सबको अच्छी लगेगी। आप आजीवन सत्य का पालन करेंगे तथा सत्य ही बोलेंगे।

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
मान सागरी

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

शरीर आपका सामान्य रूप से नीरोग रहेगा। उत्साह से आप हमेशा पूर्ण रहेंगे तथा जो भी कार्य करेंगे उसे सोत्साह सम्पन्न करेंगे। आपका आचरण उत्तम होगा तथा किसी को भी आपके आचरण से कोई शिकायत या परेशानी नहीं होगी।

धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः।
नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः।।

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

पवित्रता या शुद्धता का आप हमेशा पालन करेंगे। चाहे वह शारीरिक हो चाहे आत्मिक आपका यह सिद्धान्त होगा कि शरीर को जितना साफ रखना चाहिए उतना ही शुद्ध एवं पवित्र आत्मा को भी होना चाहिए। इसके लिए आप आजीवन प्रयत्न शील रहेंगे। आपकी बुद्धि स्थिर होगी। अतः जो भी कार्य करेंगे चंचलता से नहीं अपितु एकाग्रता से सम्पन्न करेंगे।

रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरूपश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

शारीरिक रूप से आप प्रायः स्वस्थ ही रहेंगे। साथ ही अन्य जनों को जानने वाले तथा ज्ञानी भी होंगे।

रोहिण्यां पररन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

आपका जन्म वृष राशि में हुआ है। अतः आप लालिमायुक्त गौरवर्ण तथा स्थूल गालों से युक्त होंगे। आपके नेत्र बड़े तथा मोटे होंगे। स्वाभाविक रूप से आलस्य का समावेश भी आपके अन्दर रहेगा। कुलीन लोगों के प्रति आपके मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। उनकी प्रत्येक बात को शिरोधार्य करना आप अपना परमपुनीत कर्तव्य समझेंगे। आप अच्छी बुद्धि से युक्त तथा वात कफ के स्वामी होंगे। आपके बाल घुँघराले तथा प्रकृति दानशीलता की रहेगी। आपका जीवन प्रायः सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप जीवन में सर्व प्रकार के सुखों का उपयोग करेंगे। दानशीलता की प्रवृति प्रारम्भ से ही आपके स्वभाव में होगी। शुद्धता तथा सफाई का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा समस्त कार्यों को सिद्ध करने में समर्थवान होंगे। बल का भी आप में अभाव नहीं रहेगा। धनागम प्रचुरमात्रा में होने से आपकी प्रवृति विलासमय हो जाएगी। सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु आप उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगे। आपके अन्दर तेजस्विता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आप अच्छे मित्रों के मित्र होंगे तथा आपकी मित्रता स्थिर रहेगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपकी मुखाकृति तथा जानु भाग दीर्घाकार होगा। आपके जीवन के प्रथम दो भाग कष्ट पूर्ण तथा अन्तिम दो भाग सुखपूर्ण व्यतीत होंगे। समाज के सभी वर्गों से आपका विशेष लगाव रहेगा। क्षमाशीलता तथा त्याग की भावना से आप युक्त रहेंगे। प्रारम्भिक या बचपन की अवस्था में आपको कष्ट सहने पड़ेंगे तथा कठिन परिश्रम भी करना पड़ेगा। आपकी पीठ, मुख या बगल में तिल, मस्सा लहसन या घाव का निशान हो सकता है।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी कन्या सन्तति पुत्रों से अधिक होंगी तथा आचरण एवं व्यवहार प्रशंसनीय रहेगा। आप आजीवन धन का उपयोग करेंगे तथा यश भी आपका चारों तरफ फैलेगा।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल वक्षस्थल तथा घने काले घुँघराले बालों से युक्त रहेंगे। सैक्स के प्रति आपका आकर्षण अधिक मात्रा में रहेगा। आपकी बुद्धि न्याय प्रिय होगी तथा गलत सही का निर्णय करने में सक्षम रहेंगे। आपकी चाल देखने योग्य होगी तथा शरीर के सारे अंग दीर्घ, सुडौल एवं पुष्ट होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप मन्द गति से चलना पसन्द करेंगे तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई से सम्पन्न करेंगे। परोपकार की भावना आपके मन में विद्यमान रहेगी तथा इसके पालन करने का आप आजीवन प्रयत्न करते रहेंगे। इस तरह अच्छे तथा पुण्य कार्य आप हमेशा करते रहेंगे तथा इन्ही कार्यों से सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। मुखमण्डल की आकृति थोडी बडी होगी तथा आप विलास सहित गमनप्रिय होंगे। आप कष्टों को सहन करने में समर्थ होंगे तथा उच्चाधिकारों से भी सम्पन्न हो सकते हैं। धन एवं ऐश्वर्य से आजीवन समृद्ध रहेंगे। आपके अन्दर जठराग्नि की प्रबलता रहेगी तथा स्त्री वर्ग में आप लोकप्रिय रहेंगे तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही आप सुस्वभाव से युक्त तथा विष्णु एवं शिव की पूजा करने वाले भी होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप धार्मिक प्रवृति से युक्त होंगे। देवता तथा ब्राहमणों में आपकी असीम श्रद्धा होगी तथा नियमपूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। अभिमान का अस्तित्व भी आपके अन्दर विद्यमान रहेगा। धन का आपके लिए प्रचुर मात्रा में अर्जन होता रहेगा। इसका अभाव प्रतीत नहीं होगा। आपके हृदय में दया तथा करूणां का भाव जागृत रहेगा जिसके कारण आप यत्न पूर्वक दीन दुखियों की सेवा करते रहेंगे। आप एक से अधिक कार्यों के जानने वाले या कलाओं में निपुण हो सकते हैं। ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा शरीर कान्ति युक्त होगा। आप बहुत से लोगों को सुख पहुँचाने वाले

होंगे।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

मान सम्मान से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा जीवन पर्यन्त अपार धन के स्वामी बने रहेंगे। आप एक अच्छे निशानेबाज भी बन सकते हैं। शरीर आपका गौरवर्ण का होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने में सफल रहेंगे। साथ ही नेत्र भी आपके बड़े-बड़े होंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सर्प योनि में उत्पन्न होने के कारण कभी-कभी आपको अत्यधिक मात्रा में क्रोध आएगा। साथ ही प्रचण्डता का भाव भी आपके अन्दर विद्यमान रहेगा जिससे आपको सहानुभूति या लगाव नहीं होगा उसके साथ बहुत ही कठोर व्यवहार करेंगे। साथ ही आप किसी दूसरे के द्वारा किए गए उपकार को अल्प ही स्वीकार करेंगे। प्रकृति आपकी चंचल होगी तथा जिह्वा भी आपकी स्वाद लोलुप रहेगी खट्टे, मीठे, तीखे स्वाद आपको अत्यधिक प्रिय होंगे।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशि स्थित चन्द्रमा आपके लिए अशुभ फलदायी हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य 5,10,15 तथा अमावस्या तिथियों में हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेन देन, क्रय विक्रय आदि न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य ही रखें अन्यथा अशुभ फल ही होंगे। साथ ही इन दिनों शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि समय आपके अनुकूल न चल रहा हो शारीरिक या मानसिक व्याकुलता बढ़ रही हो, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में वाधा तथा अन्य शुभ कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय पर आपको नियमित रूप से शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। साथ ही आपको श्वेत वस्त्र, श्वेत मोती, चावल, शहद, श्वेत पुष्प इत्यादि पदार्थों का भी दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप स्वयं या किसी योग्य विद्वान से करवाने चाहिए। श्रद्धानुसार आप भगवान शिव या विष्णु की भी आराधना या पूजा कर सकते

हैं। ऐसा करने से आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे तथा अशुभ फलों का नाश होगा।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman
Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India
+919837310158
ptsumanjha@gmail.com